Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

### अल्लाह तआला का आदेश

وَالَّذِیۡنَ یُمَسِّکُوۡنَ بِالۡکِتٰبِ
وَاَقَامُوا الصَّلٰوۃَ
اِنَّا لَا نُضِیۡعُ اَجۡرَ الۡمُصۡلِحِیۡنَ

(सूरः ऐराफ़ :171)

अनुवाद : और वे लोग जो किताब को मज़बूती से पकड़ लेते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं, हम निसंदेह इस्लाह करने वालों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करते।

वर्ष- 7
अंक- 45

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
# बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14 रबीउल सानी 1444 हिज्री कमरी, 10 नबुव्वत 1401 हिज्री शम्सी, 10 नवम्बर 2022 ई.

### अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

### यदि कोई किसी की उंगली को दाँत से काटे और काटने वाले का दाँत हाथ खींचने पर टूट जाए तो दाँत का क़िसास नहीं मिलेगा

(2265) हज़रत याला बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है, उन्होंने कहा मैं जैशिल उस्रा अर्थात जंग-ए-तबूक में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग में शामिल हुआ था और मेरे नज़दीक यह काम मेरे उन आमाल में से था जो (बलिहाज़-ए-सवाब) सबसे बढ़कर काबिल-ए-भरोसा हो सकते थे। (मेरे साथ) मेरा एक मज़दूर भी था जो एक आदमी से लड़ पड़ा। लड़ाई के दौरान इन दोनों में से एक ने अपने साथी की उंगली काट ली। जब उसने अपनी उंगली को ज़ोर से खींचा तो दूसरे के दाँत को झटका लगा जिससे वह गिर गया। इस पर वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास शिकायत लेकर गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके दाँत का कोई बदला नहीं दिलाया फ़रमाया : क्या वह अपनी उंगली तेरे मुँह में रहने देता कि तू उसे चबा जाता? (इब्ने जरीज) कहते थे मेरा ख़्याल है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया जिस तरह सांड चबाता है।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब इजारह, प्रकाशन 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

## वे उद्देश्य जो हम चाहते हैं और जिस के लिए हमें ख़ुदा तआला ने मबऊस फ़रमाया है वह पूरा नहीं हो सकती जब तक लोग यहां बार-बार न आएं और आने से ज़रा भी उकताएं

### हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

#### मर्कज़ में बार-बार आने का आदेश

दिसम्बर 1899 ई. के जलसा सालाना पर बहुत कम लोग आए। इस पर हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत इज़हार-ए-अफ़सोस किया और फ़रमाया "अभी तक लोग हमारे उद्देश्यों से अवगत नहीं कि हम क्या चाहते हैं कि वे बन जाएं। वे ग़रज़ जो हम चाहते हैं और जिस के लिए हमें ख़ुदा तआला ने मबऊस फ़रमाया है वह पूरी नहीं हो सकती जब तक लोग यहां बार-बार न आएं और आने से ज़रा भी उकताई।"

और फ़रमाया : "जो शख़्स ऐसा ख़्याल करता है कि आने में उस पर बोझ पड़ता है या ऐसा समझता है कि यहां ठहरने में हम पर बोझ होगा, उसे डरना चाहिए कि वह शिर्क में मुबतला है। हमारा तो यह एतेक़ाद है कि अगर सारा जहान हमारा परिवार हो जाए तो हमारी उद्देश्यों का संरक्षक ख़ुदा तआला है। हम पर ज़रा भी बोझ नहीं। हमें तो दोस्तों के वजूद से बड़ी राहत पहुँचती है। यह वस्वसा है जिसे दिलों से दूर फेंकना चाहिए। मैंने बाअज़ को यह कहते सुना है कि हम यहां बैठ कर क्यों हज़रत साहिब को तकलीफ़ दें। हम तो निकम्मे हैं। यूँ ही रोटी बैठ कर क्यों तोड़ा करें। वे यह याद रखें, यह शैतानी वस्वसा है जो शैतान ने उन के दिलों में डाला है कि इन के पैर यहां जमने न पाएं।"

एक दिन हकीम फ़ज़लदीन साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर में यहां निकम्मा बैठा क्या करता हूँ। हुक्म हो तो भेरा चला जाऊं। वहां दरस क़ुरआन-ए-करीम ही करूँगा। यहां मुझे बड़ी शर्म आती है कि मैं हुज़ूर के किसी काम नहीं आता और शायद बेकार बैठने में कोई मासियत न हो।" फ़रमाया : "आप का यहां बैठना ही जिहाद है और यह बेकारी ही बड़ा काम है।"

उद्देश्य बड़े दर्दनाक और अफ़सोस भरे लफ़्ज़ों में न आने वालों की शिकायत की और फ़रमाया "यह उज़्र करने वाले वही हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समक्ष बहाना किया था اِنَّ بُیُوۡتَنَا عَوۡرَۃٌ और ख़ुदा तआला ने उनकी तक़ज़ीब कर दी कि اِنۡ یُّرِیۡدُوۡنَ اِلَّا فِرَارًا (अल् अहज़ाब : 14) फ़रमाया "हमारे दोस्तों को किस ने बताया है कि ज़िंदगी बड़ी लंबी है। मौत का कोई वक़्त नहीं कि कब सिर पर टूट पड़े इसलिए मुनासिब है कि जो वक़्त मिले, उसे ग़नीमत समझें।" फ़रमाया "ये दिन फिर न मिलेंगे और यह कहानियां रह जाएँगी"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 410 प्रकाशन क़ादियान : 2018)

★ ★ ★

## हज़रत इब्राहीम अपनी हर एक ख़ूबी को नेअमत इलाही समझते थे और समस्त सिफ़ात को ख़ुदा तआला का दिया हुआ ख़ज़ाना क़रार देते थे

### जिस क़दर आपकी खूबियां निखरती थीं उसी क़दर आप शुक्र और अल्लाह के समक्ष तौबा करने में बढ़ते थे

### तुम इब्राहीम की तरह बनना, जो विशेषताएं उनकी हैं वह अपने अंदर पैदा करना

### इसका नतीजा यह होगा कि अल्लाह ने जो सुलूक इब्राहीम से किया था वही सुलूक तुम्हारे साथ करेगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत नहल आयत :122 شَاکِرًا لِّاَنۡعُمِہٖ ؕ اِجۡتَبٰىہُ وَہَدٰىہُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ

(अनुवाद) (वह) उस के इनामों का शुक्रगुज़ार था। उस (के रब) ने उसे बर्गुज़िदा किया और एक सीधे राह की तरफ़ राहनुमाई की, की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

अर्थात : वह अपनी हर एक ख़ूबी को नेअमत इलाही समझता था और वह इन समस्त सिफ़ात को ख़ुदा तआला का दिया हुआ ख़ज़ाना क़रार देता था। अतः चूँकि वह समस्त नेअमतों को ख़ुदा ही की अता समझता था इस लिए जिस क़दर ज़्यादा उसकी खूबियां निखरति थीं उसी क़दर वह अपने शुक्र और अल्लाह के समक्ष तौबा करने में बढ़ता था।

जब इन्सान में ये बातें हों तो फिर अल्लाह तआला की सुन्नत है कि उसको अपने फ़ज़्ल के लिए चुन लेता है इसलिए फ़रमाया तब इन नेकियों के बदले में मैं ने उसको पसंद कर लिया और उसको हर ख़ूबी से मुत्तसिफ़ पाकर अपना बर्गुज़ीदा बना लिया था और उसको ऐसे राह पर डाल दिया जो मुस्तक़ीम थी। अर्थात ख़ुदा तक पहुंचाने वाली थी।

मुस्तक़ीम के शब्द में इस तरफ़ इशारा है कि वह ख़ुदा तआला तक पहुंचाने वाली राह थी क्योंकि मुस्तक़ीम रास्ता वही होता है जो दो नुक़्तों के मध्य हो, और दीन के मामले में एक नुक़्ता इन्सान है और दूसरा नुक़्ता ख़ुदा है। अतः जो रास्ता ख़ुदा तआला तक पहुंचाए वही सीधा मार्ग होगा। और जो राह-ए-ख़ुदा तआला तक नहीं पहुँचाता वह मुस्तक़ीम कहला ही नहीं सकता क्योंकि उसका रुख इस नुक़्ता से हट गया जिसकी तरफ़

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

# हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

## सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

26 सितंबर 2022 (सोमवार के दिन)

आज का दिन जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में एक तारीख़ साज़ और अत्यधिक मुबारक दिन है। हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अमरीका के लिए अपनी पांचवी यात्रा इख़तेयार फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अमरीका का पहली यात्रा 16 जून से 24 जून 2008 मे इख़तेयार फ़रमाई थी। फिर चार साल बाद 2012 ई. में हुज़ूर अनवर अमरीका तशरीफ़ ले गए थे और 16 जून से 3 जुलाई अमरीका में क़ियाम रहा। इसी यात्रा के दौरान 27 जून 2012 को हुज़ूर अनवर ने कैपीटल हिल में अपना एतिहासिक ख़िताब फ़रमाया था।

इसके बाद अगले ही साल हुज़ूर अनवर ने अमरीका के पश्चिमी क्षेत्र (west coast) लास अंजेलीज़ का सफ़र इख़तेयार फ़रमाया था। इस सफ़र में हुज़ूर अनवर का क़ियाम 4 मई से 15 मई तक रहा और मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों का आयोजन हुआ। फिर साल 2018 ई. में हुज़ूर अनवर ने अमरीका का चौथा सफ़र इख़तेयार फ़रमाया यह सफ़र 15 अक्तूबर से 5 नवंबर के अरसा पर मुश्तमिल था। इस सफ़र में हुज़ूर अनवर दो से तीन रोज़ के लिए गोइटे माला भी तशरीफ़ ले गए थे।

आज इस पांचवें सफ़र और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यधिक मुबारक दौरा का आग़ाज़ शहर zion से हो रहा है।

लंदन से अमरीका के लिए रवानगी 26 सितंबर सोमवार के दिन1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए अहबाब जमाअत पुरुषों महिलाओं जमा थे। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और अपना हाथ हिला कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। इसके बाद एयरपोर्ट के लिए रवानगी हुई। क़रीबन 1 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हीथ्रो एयरपोर्ट पर पहुंचे और स्पैशल लाऊंज में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर की आमद से क़बल एक स्पैशल इंतेज़ाम के तहत सामान की बुकिंग और बोर्डिंग कारडज़ के हुसूल की कार्रवाई मुकम्मल हो चुकी थी। एयरपोर्ट पर हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वक़ास अहमद साहिब नायब सदर मज्लिस अन्सारुलाह यू.के और आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब अफ़्सर हिफ़ाज़त ख़ास हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ आए थे।

जमाअत अहमदिया अमरीका ने सफ़र के ताल्लुक़ से बाअज़ उमूर की तकमील के लिए दो अफ़राद आदरणीय मुनइम नईम साहिब चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़रस्ट अमरीका और आदरणीय डाक्टर तनवीर अहमद साहिब पर मुश्तमिल वफ़द लंदन भिजवाया था। अमरीका से आने वाले ये दोनों अहबाब भी इस सफ़र में क़ाफ़िला के साथ थे।

2 बजकर 45 मिनट पर एक ख़ुसूसी प्रोटोकोल इंतेज़ाम के तहत हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला जहाज़ पर सवार हुए। यूनाईटिड एयर लाईन की परवाज़ (UA959) 3 बजकर 20 मिनट पर हीथ्रो एयरपोर्ट लंदन से शिकागो (अमरीका) के लिए रवाना हुई। क़रीबन साढ़े आठ घंटे की मुसलसल परवाज़ के बाद शिकागो के मुक़ामी वक़्त के मुताबिक़ 5 बजकर 53 मिनट पर जहाज़ शिकागो के o'hare इंटरनैशनल एयरपोर्ट पर उतरा। शिकांगो (अमरीका) का वक़्त बर्तानिया के वक़्त से 6 घंटे पीछे है।

अमरीका में हुज़ूर अनवर का आना
और हृदय से स्वागत

अमीर साहिब यू. एस. ए. आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब और नायब अमीर यू. .एस. ए आदरणीय डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब ने जहाज़ के दरवाज़ा पर हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा।

यूनाईटिड एयर लाईन के टर्मीनल 5 शिकागो के अस्सिटैंट मैनेजर mr.chris sances शिकागो एयरपोर्ट अथार्टी के मैनेजर mr.ben sipiora लोकल पुलिस चीफ़ और कस्टम बॉर्डर पैट्रोल वी आई पी रेसेप्शन इंचार्ज Mr. parisi ने भी जहाज़ के दरवाज़ा पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का इस्तक़बाल किया और एक ख़ास प्रोटोकोल इंतेज़ाम के तहत हुज़ूर अनवर को एक ख़ुसूसी लाऊंज में अपने साथ लेकर आए।

लाऊंज में वसीम मलिक साहिब नायब अमीर अमरीका, अमजद महमूद ख़ान साहब नैशनल सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा। लाऊंज में आदरणीया साहबज़ादी अम्तुल मुसव्विर साहिबापत्नी आदरणीय अमीर साहिब यू. एस. ए. ने हज़रत बेगम साहिबा खुदा आप की आयु में बरकत दे को स्वागतम कहा। इसी लाऊंज में इमीग्रेशन ऑफीसर ने आकर पासपोर्ट देखे। 6 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए तो आदरणीय डाक्टर हमीदुर्रहमान साहिब नायब अमीर यू. एस. ए., आदरणीय अज़हर हनीफ़ साहिब नायब अमीर और मुब्लिग़ इंचार्ज यू. एस. ए., आदरणीय मुख़तार अहमद मिलही साहिब नैशनल जनरल सैक्रेटरी, आदरणीय डाक्टर बिलाल राना साहिब नैशनल सैक्रेटरी उमूर-ए-आमा, मलिक बशीर अहमद साहिब नैशनल अमीर, आदरणीय शमशाद अहमद नासिर साहिब मुब्लिग़ साउथ वर्जीनिया और आदरणीय इरशाद अहमद माही साहिब मुबल्लिग़ शिकागो ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का इस्तक़बाल करते हुए ख़ुश-आमदीद कहा।

अब एयरपोर्ट से ज़ाइन जमाअत के मर्कज़ "मस्जिद फ़तह अज़ीम" के लिए रवानगी थी। टर्मीनल 5 शिकागो एयरपोर्ट के अस्सिटैंट मैनेजर हुज़ूर अनवर के साथ थे। मौसूफ़ ने लाऊंज में अपनी ख़ाहिश का इज़हार करके हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई थी। जब हुज़ूर अनवर एयरपोर्ट से बाहर गाड़ी में बैठ रहे थे तो यह मैनेजर हुज़ूर अनवर की गाड़ी के पास खड़े थे और उनकी आँखों में आँसू थे। कहने लगे कि आज मेरी सारी ज़िंदगी का एक रुहानी तजुर्बा है। पता नहीं कि दुनिया में मेरी कौन सी नेकी काम आई है कि मुझे इतनी बड़ी रुहानी शख़्सियत से मिलने का अवसर मिला है और मुझे इस शख़्सियत की क़ुरबत नसीब हुई है और मुझे इतनी बड़ी जज़ा मिली है। आज का वाक़िया सारी ज़िंदगी याद रखने वाला वाक़िया है।

शिकागो एयरपोर्ट टर्मीनल 5 के मैनेजर mr.ben sipiora ने भी अपनी ख़ाहिश का इज़हार करके हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई। मौसूफ़ इन दिनों धुट्टी पर थे।जब उनको इलम हुआ कि ख़लीफ़तुल मसीह आ रहे हैं तो उन्होंने अपनी रुख़स्त निरस्त कर दी और हुज़ूर अनवर के इस्तक़बाल और हुज़ूर अनवर से मिलने के लिए आ गए। कहने लगे जब साल 2012 में शिकागो आए थे तो उस वक़्त में मिल नहीं सका था आज इलम होने पर में अपनी रुख़स्त ख़त्म करके हुज़ूर को देखने और मिलने के लिए आया हूँ। 6 बजकर 45 मिनट पर एयरपोर्ट से रवाना हो कर क़रीबन एक घंटा के सफ़र के बाद 7 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ज़ायन जमाअत में पधारना हुआ।

शेष पृष्ठ 7 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

"इस वक़्त हमारी जमाअत को मसाजिद की बड़ी ज़रूरत है। यह ख़ाना-ए-ख़ुदा होता है। जिस गांव या शहर में हमारी मस्जिद क़ायम हो गई तो समझो कि जमाअत की तरक़्क़ी की बुनियाद पड़ गई ... लेकिन शर्त यह है कि क़ियाम-ए-मस्जिद में नियत इख़लास वाली हो। केवल अल्लाह के लिए उसे किया जाए।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अल्लाह तआला करे कि यह मस्जिद आपने विशेषता अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए बनाई हो और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद से फ़ैज़ पाने वाले हों

जिस में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए मस्जिद बनाई अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए वैसा ही घर बनाएगा

अल्लाह तआला की रज़ा का इन्सान तभी हामिल बनता है जब उसके हुक्मों पर चलने वाला हो, उसकी इबादत का हक़ अदा करने वाला हो, हुक़ूक़ुल ईबाद अदा करने वाला हो, वफ़ा और इख़लास से दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाला हो, अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाला हो

इस मस्जिद को आबाद रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। आपस में प्यारो मुहब्बत से रहना हमारी ज़िम्मेदारी है। रवादारी और भाई चारे के पैग़ाम को दुनिया में फैलाना हमारी ज़िम्मेदारी है। इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम का पैग़ाम दुनिया को देना हमारी ज़िम्मेदारी है।

नियमित दुआओं से अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा देना हमारी ज़िम्मेदारी है। अपनी नसलों की इस्लाह की फ़िक्र करना हमारी ज़िम्मेदारी है

आज हम हैं जिन्होंने ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी के मयार क़ायम करने हैं जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हम हैं जिन्होंने इख़लास-ओ-वफ़ा के साथ अल्लाह तआला के हुक्मों की तामील करनी है, हम हैं जिन्होंने हर तरफ़ मोहब्बतों को फैलाना है और नफ़रतों को दूर करना है, हम हैं जिनको ख़ुदा तआला पर कामिल तवक्कुल होना चाहिए कि हर काम का बनाने वाला ख़ुदा तआला है और इस्लाम ही अब दुनिया का कामिल और ग़ालिब आने वाला मज़हब है

हम में से हर एक को जायज़ा लेना चाहिए कि क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस मिशन को पूरा करने के लिए हम अपना किरदार अदा कर रहे हैं? क्या बुराईयों के ख़ातमे के लिए भरपूर कोशिश कर रहे हैं? क्या नेकियों के अपनाने के लिए भरपूर कोशिश हो रही है? क्या इबादतों के मयार हासिल करने की हम भरपूर कोशिश कर रहे हैं?

हमें इन ईमान लाने वालों में से होना चाहिए जो मस्जिदों को आबाद करने वाले हैं

और मस्जिदों को आबाद करने वालों की निशानी ये हैं कि वे एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक इंतेज़ार करते हैं

मस्जिद बैतुल इकराम डैलिस (dallas) अमरीका के उद्घाटन के अवसर पर अहबाब-ए-जमाअत को बतौर अहमदी मुस्लमान अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की तलक़ीन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 07 अक्टूबर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۔ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ

(सूरः ऐराफ़ : 30 - 32)

इन आयात का यह अनुवाद है कि तू कह दे कि मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है। तथा यह कि तुम हर मस्जिद में अपनी उद्देश्य (अल्लाह की तरफ़) सीधे रखो। और दीन को उसके लिए ख़ालिस करते हुए उसी को पुकारा करो। जिस तरह उसने तुम्हें पहली बार पैदा किया इसी तरह तुम (मरने के बाद) लौटोगे। एक गिरोह को उसने हिदायत बख़शी और एक गिरोह पर गुमराही लाज़िम हो गई। निसंदेह ये वे

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۫ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ۔ فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ

लोग हैं जिन्हों ने ख़ुदा को छोड़कर शैतानों को दोस्त बना लिया और ये गुमान करते हैं कि वे हिदायत याफताह हैं। हे आदम के बेटो हर मस्जिद में अपनी ज़ीनत (यानी लिबास-ए-तक़्वा) साथ ले जाया करो और खाओ और पियो लेकिन हद से तजावुज़ न करो। निसंदेह वह हद से तजावुज़ करने वालों को पसंद नहीं करता।

आज आपको अपनी मस्जिद के उद्घाटन की अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़र्मा रहा है। जबकि इसकी तामीर तो कुछ अरसा पहले मुकम्मल हो गई थी लेकिन इस का अब रस्मी उद्घाटन हो रहा है। यहां मस्जिद के तौर पर शुरू में एक हाल बनाया गया था लेकिन अब बाक़ायदा मस्जिद आपने बनाई है। बहरहाल अब एक ख़ूबसूरत अच्छी मस्जिद बन गई है और गुंजाइश के लिहाज़ से भी काफ़ी वसीअ है। अल्लाह तआला इन सबको इस मस्जिद का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए जिन्हों ने इस मस्जिद की तामीर में हिस्सा लिया है।

अल्लाह तआला करे कि यह मस्जिद आपने विशेषतः अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए बनाई हो और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद से फ़ैज़ पाने वाले हों जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए मस्जिद बनाई अल्लाह तआला जन्नत में उसके लिए वैसा ही घर बनाएगा।

(सही मुस्लिम किताब अल् मसाजिद बाब فضل بناء المسجد... हदीस :1189)

अल्लाह तआला की रज़ा के लिए बनाई हुई मस्जिद का काम मस्जिद की तामीर के बाद ख़त्म नहीं हो जाता बल्कि

अल्लाह तआला की रज़ा का इन्सान तभी हामिल बनता है जब उसके हुक्मों पर चलने वाला हो, उस की इबादत का हक़ अदा करने वाला हो, हुक़ूक़ुल ईबाद अदा करने वाला हो, वफ़ा और इख़लास से दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाला हो, अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाला हो।

हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमने ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को माना है। हमेशा हमें याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानना और आप की बैअत में आना हम पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डालता है। हमारा काम आप अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर ख़त्म नहीं हो गया बल्कि पहले से बढ़ गया है। तभी हम इन इनामात के वारिस ठहरेंगे जिनका वादा अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किया है। अतः अपनी ज़िम्मेदारियों को हम में से हर एक को समझना होगा।

इस मस्जिद को आबाद रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। आपस में प्यार मुहब्बत से रहना हमारी ज़िम्मेदारी है। रवादारी और भाई चारे के पैग़ाम को दुनिया में फैलाना हमारी ज़िम्मेदारी है। इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम का पैग़ाम दुनिया को देना हमारी ज़िम्मेदारी है। नियमित दुआओं से अपनी इस्लाह की तरफ़ तवज्जा देना हमारी ज़िम्मेदारी है। अपनी नसलों की इस्लाह की फ़िक्र करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

तभी हम मस्जिद का हक़ भी अदा कर सकेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जहां इस्लाम का परिचय करवाना हो वहां मस्जिद बना दो। (उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 119 ऐडीशन 1984 ई.) अब इस मस्जिद के बनने से ज़ाहिरी तौर पर तो इस्लाम का परिचय इस इलाक़े में हो जाएगा। कुछ पड़ोसी आए भी और उन्होंने अच्छे ख़्यालात का इज़हार भी किया बावजूद आजकल ज़्यादा लोगों के आने और रश और फिर शोर के। एक बिल्कुल साथ वाले पड़ोसी कुछ दिन हुए मिलने आए थे तो उन्होंने यही कहा कि हम ख़ुश हैं कि हमें आप लोगों की हम-साएगी मिल गई लेकिन हमें बहरहाल अपने हमसायों का ख़्याल रखना चाहिए और ग़ैर ज़रूरी शोर और हंगामा यहां नहीं करना चाहिए और क़ानून के दायरे में रह कर सब काम करने चाहिऐं। तो बहरहाल मस्जिद से परिचय हमसायों को भी होगा और यहां सड़क पर से गुज़रने वालों को भी होगा और ये जो परिचय का रास्ता खुला है इस से आपके तब्लीग़ के रास्ते भी खुलेंगे। अतः हर अहमदी को इस्लाम की तालीम का नमूना भी बनना पड़ेगा और बनना चाहिए। दुनिया को एक वाज़िह फ़र्क़ नज़र आना चाहिए कि इस दुनियादार समाज में ऐसे लोग भी हैं जो दुनिया में रहते हुए दुनिया के काम करते हुए फिर दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले भी हैं।

और अपने पैदा करने वाले क़ादिर-ओ-तवाना ख़ुदा से ताल्लुक़ रखने वाले भी हैं और मख़लूक़ की हमदर्दी करने वाले भी हैं और मख़लूक़ के काम आने वाले भी हैं। जब ये चीज़ दुनियादार देखते हैं तो उनमें तजस्सुस पैदा होता है और फिर यही इस्लाम की तब्लीग़ के रास्ते खौलता है। अतः अब हर अहमदी को पहले से बढ़कर इस्लाम की तालीम की अमली तस्वीर बनने की ज़रूरत है।

यह आयात जो मैंने तिलावत की हैं इन में भी मसाजिद के साथ जुड़ने वालों की बाअज़ ज़िम्मेदारियों की तरफ़ अल्लाह तआला ने तवज्जा दिलाई है। सबसे पहले तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि इन्साफ़ क़ायम करो और इन्साफ़ करने के बारे में दूसरी जगह क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी क़ौम की दुश्मनी भी तुम्हें इन्साफ़ से दूर न करे। अब यह मयार जो इन्साफ़ का क़ायम करने वाला है वे किसी दूसरे के मुताल्लिक़ ग़लत सोच रख ही नहीं सकता। किसी को नुक़्सान पहुंचाने का तो सवाल ही नहीं। ऐसा शख़्स तो अवसर तलाश करेगा कि मैं किस तरह दूसरों को फ़ायदा पहुंचाने में अपना किरदार अदा कर सकता हूँ और ऐसे हुक़ूक़ क़ायम करने वाला जब इन्सान हो तो निसंदेह माहौल पर एक नेक असर डालता है और यही नेक असर फिर तब्लीग़ के रास्ते खौलता है। अतः अल्लाह तआला ने हक़ीक़ी मोमिनों को, मस्जिद में आने वालों को मस्जिद के हवाले से पहली नसीहत यह फ़रमाई कि हुक़ूक़ुल ईबाद की अदायगी के सामान करो और इस के लिए सबसे अहम चीज़ इन्साफ़ क़ायम करना है। अब जहां अल्लाह तआला ग़ैरों और दुश्मनों से भी इन्साफ़ क़ायम करने का हुक्म दे रहा है तो अपनों से किस क़दर प्यारो मुहब्बत से हमें रहना चाहिए और जब यह हालत होती है तो फिर अल्लाह तआला के प्यार की नज़र भी ऐसे लोगों पर पड़ती है। जब यह लोग मस्जिद में अल्लाह तआला की इबादत के लिए दाख़िल होते हैं तो अल्लाह तआला उनकी इबादत को क़बूल फ़रमाता है लेकिन अगर एक शख़्स अपने घर में अपनी बीवी से नेक सुलूक नहीं कर रहा, हर वक़्त उसे तान-ओ-तशनीअ का निशाना बनाया हुआ है, बच्चे इस से अलैहदा ख़ौफ़-ज़दा हैं और फिर वे अपने अमल से बच्चों को दीन से दूरी का बायस भी बन रहा है तो फिर ऐसे शख़्स के न ही जमाअती काम और न ही इबादतें अल्लाह तआला के हुज़ूर काबिल-ए-क़बूल होते हैं। इस दो अमली की वजह से धोखा है जो इन्सान किसी और को नहीं दे रहा होता बल्कि अपने आपको दे रहा होता है।

अतः हक़ीक़ी मोमिन वही है जो अंदर और बाहर इन्साफ़ क़ायम करने वाला है, जिसका कथनी और करनी अंदर और बाहर एक जैसा है और यही लोग वे हैं जो हक़ीक़त में मस्जिद की आबादी का हक़ अदा करने वाले हैं क्योंकि उनके दिल अल्लाह तआला की ख़शीयत से परिपूर्ण हैं।

अतः यह मयार हासिल करना हमारा काम है अन्यथा केवल मस्जिद बना देना और यहां आकर अपने सिर से बोझ उतारने के लिए जल्दी जल्दी नमाज़ें पढ़ लेना यह कोई एहमियत नहीं रखता। और जब इन्सान यह मयार हासिल कर लेता है तो फिर वह अल्लाह तआला के नज़दीक एक मासूम बच्चे की तरह है, इस का अंजाम बख़ैर है क्योंकि वे अल्लाह तआला के हक़ के साथ बंदों के हक़ भी अदा कर रहा है। अतः किसी को इस बात पर ही नाज़ नहीं होना चाहिए कि मैं बहुत नमाज़ पढ़ने वाला हूँ। पाँच वक़्त मस्जिद में आ जाता हूँ और जमाअत के काम भी कर रहा हूँ तो यह काफ़ी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो बंदों के हुक़ूक़ अदा नहीं करता वे ख़ुदा तआला का भी हक़ अदा नहीं करता।

(جامع الترمذی ابواب البر والصلة باب ماجاء فی الشکر... हदीस 1954)

अतः किसी ख़ुश-फ़हमी में हमें नहीं रहना चाहिए। हक़ीक़ी आबिद और मस्जिदों को आबाद करने वाला वही है जो ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ और ख़शीयत अपने अंदर रखते हुए अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल करने वाला हो। फिर अल्लाह तआला ने दुबारा ज़ोर देकर फ़रमाया कि अगर तुमने अल्लाह तआला के हुक्मों पर अमल नहीं किया, दीन को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करते हुए अपनी हालतों को सही रास्तों पर चलाने के लिए भरपूर कोशिश नहीं की, तौबा और अस्तग़फ़ार की तरफ़ मुस्तक़िल तवज्जा न की तो शैतान तुम पर ग़ालिब आ जाएगा। अतः अल्लाह तआला के आगे झुकते हुए तौबा और अस्तग़फ़ार की तरफ़ मुस्तक़िल तवज्जा रखो। आजकल के इस दुनिया-दारी के माहौल में तो खासतौर पर इस तरफ़ बहुत तवज्जा की ज़रूरत है तभी कामयाबी मिलेगी, तभी एक मासूम बच्चे की तरह अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर होगे।

## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मुस्लमानों की हालत बिगड़ने की वजह से ही इस्लाम का ज़वाल शुरू हुआ जब उन्होंने इन्साफ़ और इबादतों को दिखावा बना लिया या उसका हक़ अदा नहीं किया और फिर सब कुछ ज़ाए हो गया।

ख़ूबसूरत मस्जिदें तो बेशक बनाते रहे और बना रहे हैं और अहमदियों की मस्जिदों को आजकल पाकिस्तान में तो गिराने का भी ज़ोर है इसलिए कि अहमदियों की मसाजिद की हमारी मस्जिदों जैसी शक्ल न हो, उनके मिनारे न हों, उनकी मेहराबें न हों लेकिन इबादत करने वाले उनमें नहीं पैदा हुए। इसी बात को यह गर्व समझते हैं कि हम अहमदियों पर ज़ुलम कर रहे हैं या उनके ज़ोअम में उनको सही रास्ते पर चलाने की तरफ़ मायल करने की कोशिश कर रहे हैं। बहरहाल पहले ज़माने में भी यह ज़वाल हुआ, इसी लिए हुआ कि मस्जिदों की आबादी ज़ाहिरी थी। यदा-कदा कुछ जगहों पर हक़ीक़ी मुस्लमान भी नज़र आते थे लेकिन उमूमी तौर पर ज़वाल था। बहरहाल यह सब कुछ होना था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बारे में आगाह फ़र्मा दिया था लेकिन इस ज़ुल्मत के ज़माने के बाद जो रोशनी का ज़माना मसीह मौऊद की आमद से आया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिस गुलाम-ए-सादिक़ की हमने बैअत की तौफ़ीक़ पाई है इस अह्द के साथ कि दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखेंगे और कुरान-ए-करीम के हुक्मों पर चलेंगे तो हमें फिर जैसा कि मैंने कहा बहुत तवज्जा अपनी हालतों पर देनी होगी। इन ग़ैरों जैसी मस्जिदों की हालत से अपनी मस्जिदों को बचाना होगा। जिसके बारे में हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्ना से एक रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अनक़रीब ऐसा ज़माना आएगा कि नाम के सिवा इस्लाम का कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। अलफ़ाज़ के सिवा क़ुरआन का कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। इस ज़माने के लोगों की मस्जिदें बज़ाहिर तो आबाद नज़र आयेंगी लेकिन हिदायत से ख़ाली होंगी। उनके उल्मा आसमान के नीचे बसने वाली मख़लूक़ में से बदतरीन मख़लूक़ होंगे। उनमें से ही फ़ित्ने उट्ठेंगे और उन्ही में लौट जाऐंगे।

(الجامع لشعب الایمان جزء 3 صفحه 318 باب فی نشر العلم حدیث 1763مکتبۃ الرشدناشرون ریاض 2003ء)

और यही कुछ हम आजकल अक्सर मुस्लमानों की मसाजिद में देख रहे हैं। तो यह हालत जो हम आजकल देख रहे हैं यह हमें होशयार करने वाली है। उनमें तो फ़ित्नों के इलावा कुछ है ही नहीं। सिर्फ ज़ोर है तो जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि जमाअत की मस्जिदों के मीनार गिराओ। ये तो मस्जिद नहीं कहते, इबादतगाहें, उनकी मेहराबें गिरा दो। और कोई दीन की ख़िदमत नहीं है उनकी। कोई इन्साफ़ नहीं। बहरहाल ये बातें हमें सबक़ देती हैं कि किस तरह हमने ख़ालिस हो कर मस्जिदों के और बंदों के हक़ अदा करने हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन आयात में से पहली आयत की तशरीह करते हुए फ़रमाया कि "इस्लाम की ज़ाहिरी और जस्मानी सूरत में भी कमज़ोरी आ गई है। वह क़ुव्वत और शौकत इस्लामी सलतनत को नहीं और यही दीनी तौर पर वे बात जो مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ में सिखाई गई थी उसका नमूना नज़र नहीं आता है।

अंदरूनी तौर पर इस्लाम की हालत बहुत कमज़ोर हो गई है और बैरूनी हमला-आवर चाहते हैं कि इस्लाम को नाबूद कर दें। उनके नज़दीक मुस्लमान कुत्तों और ख़िंज़ीरों से बदतर हैं। उनकी ग़रज़ और इरादे यही हैं कि वे इस्लाम को तबाह कर दें और मुस्लमानों को हलाक करें।

अब ख़ुदा की किताब के बग़ैर और इस की ताईद और रोशन निशानों के सिवा उनका मुक़ाबला मुम्किन नहीं। और इसी ग़रज़ के लिए ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से इस सिलसिला को क़ायम किया है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 450 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः ऐसे हालात में अब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वाले ही हैं जिन्हों ने अपनी हालतों को अपना हक़ बैअत निभाते हुए क़ुरआन-ए-करीम की तालीम के मुताबिक़ दुरुस्त नहीं किया और अपनी हालतों पर हमेशा नज़र नहीं रखी तो फिर हम उन लोगों में शुमार नहीं हो सकेंगे जिन्हों ने इस्लाम की पुनः प्रसार के इस दौर में अपनी बैअत का हक़ अदा करना था।

हम ही हैं जिन्हों ने इस्लाम की खोई हुई साख को दुबारा क़ायम करना है।

जो नक़्शा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खींचा है यह बहुत ख़ौफ़नाक नक़्शा है और अमलन यही नज़र आता है। दुनिया को हमने बताना है कि तुम जो इस्लाम को और मुस्लमानों को हक़ीर समझते हो और तुम्हारे नज़दीक ये जानवरों से भी बदतर हैं लेकिन याद रखो यही लोग हैं जिनकी तालीम पर अमल से दुनिया की बक़ा है। अतः मुकम्मल ख़ुद-एतिमादी के साथ और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को उसके आगे झुकते हुए, मांगते हुए, हमें दुनिया की राहनुमाई का काम करना होगा।

कुछ नौजवान सवाल करते हैं, एक नौजवान ने सवाल किया कि किस तरह हम उन लोगों का मुक़ाबला कर सकते हैं जो लोग हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं? उसे भी मैंने यही कहा था कि एतमाद पैदा करो और इस यक़ीन पर क़ायम रहो कि आज दुनिया की बक़ा हमारे हाथों में है क्योंकि हम इस मसीह मौऊद और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ के मानने वाले हैं जो दुनिया को ज़िंदगी देने के लिए अल्लाह तआला ने भेजा है, जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई तालीम के फैलाने के लिए अल्लाह तआला ने भेजा है और अब इसके साथ जुड़ने से ही दुनिया-ओ-आख़िरत सँवर सकते हैं। दुनिया वालों को बताएं कि तुम इस दुनिया की चमक दमक और प्रगतियों पर ख़ुश न हो जाओ। मरने के बाद की ज़िंदगी हमेशा की ज़िंदगी है और वहां अगर इन्सान ख़ाली हाथ जाए फिर अल्लाह तआला की नाराज़गी का सामना करना होगा और फिर वह क्या सुलूक करता है वह बेहतर जानता है लेकिन इस के साथ हमें हमेशा इस बात को भी सामने रखना चाहिए कि जब हम दुनिया को इस तफ़सील से होशयार करेंगे तो हमारी अपनी हर कथनी और करनी इस तालीम के मुताबिक़ हो, हमारी इबादतों के मयार बुलंद हों और हमारे हुक़ूक़ुल ईबाद के मयार बुलंद हों। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर उसी बारे में मुस्लमानों और इस्लाम का नक़्शा खींचते हुए मज़ीद फ़रमाया कि "इस वक़्त इस्लाम जिस चीज़ का नाम है इस में फ़र्क़ आ गया है। समस्त बुरे काम भर गए हैं।" अर्थात आला अख़लाक़ की तो कोई हालत नहीं रही।" और वे इख़लास जिसका ज़िक्र مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ में हुआ है आसमान पर उठ गया है। ख़ुदा तआला के साथ सिदक़, वफ़ादारी, इख़लास, मुहब्बत और ख़ुदा पर तवक्कुल अंत हो गए हैं। अब ख़ुदा तआला ने इरादा किया है कि फिर नए सिरे से उन क़ुव्वतों को ज़िंदा करे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 352-353 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमें शुक्र करना चाहिए कि इस्लाम की इस गिरी हुई हालत को सँभालने के लिए अल्लाह तआला के भेजे हुए फ़िरिस्तादे के साथ हम मुंसलिक हैं। ग़ैर मुस्लिमों और इस्लाम मुख़ालिफ़ लोगों ने जो इस्लाम पर हमले किए और इस अज़ीम मज़हब को ज़लील और हक़ीर समझा तो इस में मुस्लमानों का अपना हाथ भी था। अगर मुस्लमान न बिगड़ते तो दुश्मन कभी इस तरह इस्लाम पर हमले करने की जुर्रत न करता लेकिन आज हम हैं जिन्हों ने ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी के मयार क़ायम करने हैं जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, हम हैं जिन्होंने इख़लास-ओ-वफ़ा के साथ अल्लाह तआला के हुक्मों की तामील करनी है, हम हैं जिन्हों ने हर तरफ़ मोहब्बतों को फैलाना है और नफ़रतों को दूर करना है, हम हैं जिनको ख़ुदा तआला पर कामिल तवक्कुल होना चाहिए कि हर काम का बनाने वाला ख़ुदा तआला है और इस्लाम ही अब दुनिया का कामिल और ग़ालिब आने वाला मज़हब है।

और इस के लिए हमने अपनी तमाम-तर सलाहियतों को बरू-ए-कार लाना है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सुलताने नसीर बनना है। यह तो ख़ुदा तआला की तक़दीर है। जो काम उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सपुर्द किए हैं और जो वादे अल्लाह तआला ने आप से किए हैं वे तो इंशा अल्लाह पूरे होने हैं। हम लोग इस में सहयोगी बनें तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल करने वाले बनेंगे। अगर हम आगे न बढ़े तो अल्लाह तआला कोई और लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मदद के लिए भेज देगा लेकिन काम तो यह होना ही है। अतः हमें अपनी हालतों की तरफ़ नज़र रखनी चाहिए और जहां कमियां कमज़ोरियाँ हैं उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

क्या कमज़ोरियाँ हैं जिनको दूर करना है इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं अब यह ज़माना है कि इस में दिखावा, अजब और तकब्बुर की एक किस्म है आत्मनिरीक्षण अपने आपको ही सब कुछ समझना। तकब्बुर, द्वेष,


## हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

दिखावा इत्यादि बुरी सिफ़ात तो तरक़्क़ी कर गई हैं और مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ इत्यादि अच्छी सिफ़ात जो थी वह आसमान पर उठ गए हैं।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 353 हाशिया)

तवक्कुल, तदबीर इत्यदि सब कलअदम हैं। अब ख़ुदा का इरादा है कि उनकी तुख़्म-रेज़ी हो।

अतः आप ने फ़रमाया ये सब बुराईयां तो अब बढ़ गई हैं और नेकियां ख़त्म हैं लेकिन अल्लाह तआला ने जो अपने बंदों पर बड़ा मेहरबान है वे बंदों को ज़ाए नहीं करना चाहता। उसने अब यह इरादा कर लिया है कि नेकियां तरक़्क़ी करें और बुराईयां ख़त्म हों। अतः

हम में से हर एक को जायज़ा लेना चाहिए कि क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस मिशन को पूरा करने के लिए हम अपना किरदार अदा कर रहे हैं? क्या बुराईयों के ख़ातमे के लिए भरपूर कोशिश करर है हैं? क्या नेकियों के अपनाने के लिए भरपूर कोशिश हो रही है? क्या इबादतों के मयार हासिल करने की हम भरपूर कोशिश कर रहे हैं?

नेकियां करने की तौफ़ीक़ भी ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से मिलती है। अगर हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल को हासिल करने के लिए भरपूर कोशिश नहीं कर रहे जो इबादत से हासिल होती है ऐसी इबादत जो ख़ालिस अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हो न कि केवल अपनी ख़ाहिशात की तसकीन और तकमील के लिए तो फिर हमारी कोशिशें बेकार हैं या इन बातों के हुसूल की ख़ाहिश बेकार है। अतः बहुत गहराई से जायज़े लेने की ज़रूरत है। बहुत ज़्यादा अस्तग़फ़ार करने की ज़रूरत है। अपने आमाल मुसलसल अल्लाह तआला की रज़ा के मुताबिक़ बजा लाने की ज़रूरत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "आमाल के लिए इख़लास शर्त है। जैसा कि फ़रमाया مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ यह इख़लास उन लोगों में होता है जो अबदाल हैं।" फ़रमाया कि "ख़ूब याद रखो कि जो शख़्स ख़ुदा तआला के लिए हो जाए ख़ुदा तआला उस का हो जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 354-355 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह वे गुण है जिसे अपनाने की ज़रूरत है। हम ख़ुद तो अल्लाह तआला के हक़ अदा नहीं करते और कह देते हैं कि अल्लाह तआला हमारी दुआएं नहीं सुनता, कुछ लोगों को यह भी शिकवा रहता है। जायज़ा लें, देखें किस हद तक हमने ख़ुदा तआला के हक़ अदा कर दिए हैं। अल्लाह तआला तो इतना मेहरबान है। हमारी बेशुमार ग़लतियों के बावजूद भी हमें नवाज़ता चला जा रहा है। अतः हमें इस बात पर नज़र रखनी है कि किस तरह हमने ख़ुदा तआला के हक़ अदा करने हैं और अल्लाह तआला का सबसे बड़ा हक़ यह है कि उसकी इबादत का हक़ अदा किया जाए। मस्जिद हमने बनाई है तो इसका हक़ अदा करें। इस में ख़ालिस हो कर उसकी इबादत के लिए आएं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "मैंने प्रसतिश के लिए ही जिन्न और इन्स को पैदा किया है। हाँ यह प्रसतिश और हज़रत इज़्ज़त के सामने दायमी हुज़ूर के साथ खड़ा होना बजुज़ मुहब्बत ज़ातिया के मुम्किन नहीं और मुहब्बत से मुराद एक तरफ़ा मुहब्बत नहीं बल्कि ख़ालिक़ और मख़लूक़ की दोनों मुहब्बतें मुराद हैं ता बिजली की आग की तरह जो मरने वाले इन्सान पर गिरती है और जो उस वक़्त इस इन्सान के अंदर से निकलती है बशरियत की कमज़ोरियों को जला दें और दोनों मिलकर समस्त रुहानी वजूद पर क़बज़ा कर लें।"

(ज़मीमा बराहीन-ए-अहमदिया भाग 5, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 217-218)

अतः दाइमी तवज्जा के साथ, मुस्तक़िल तवज्जा के साथ अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनी होगी और उसी वक़्त यह होगा जब अल्लाह तआला से मुहब्बत हो। ऐसी ज़ाती मुहब्बत हो जो किसी और से न हो तब अल्लाह तआला की मुहब्बत और इन्सान की अल्लाह से मुहब्बत, बंदे की अल्लाह से मुहब्बत वह नताइज पैदा करती है जो एक इन्क़िलाब ले आती है।

अतः जो लोग थोड़ी सी दुआ के बाद थक जाते हैं या जो दुआ का फ़लसफ़ा मालूम करना चाहते हैं, जो ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ पैदा करना चाहते हैं उनको इस हवाले पर ग़ौर करना चाहिए।

केवल ज़रूरत के वक़्त अल्लाह तआला के दरवाज़े पर मांगने न जाएं बल्कि अल्लाह तआला से एक ज़ाती मुहब्बत पैदा करें फिर अल्लाह तआला उस इन्सान से मुहब्बत करता है।

और इस के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला और उसके रसूल के हुक्मों की मुकम्मल इताअत की जाए। अल्लाह के रसूल से मुहब्बत करना भी ज़रूरी है और मुहब्बत के जज़बे से इताअत की जाए। फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत का इज़हार होता है और जब ये दो मुहब्बतें मिलती हैं तो फिर जैसा कि फ़रमाया अल्लाह तआला के फ़ज़लों की वे बारिश बरसती है जो इन्सान की सोच से भी बाला है।

फिर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "चूँकि इन्सान फ़ित्रतन ख़ुदा ही के लिए पैदा हुआ जैसा कि फ़रमाया مَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِيَعۡبُدُوۡنِ। इस लिए अल्लाह तआला ने उस की फ़ित्रत ही में अपने लिए कुछ न कुछ रखा हुआ है और मख़फ़ी दर मख़फ़ी अस्बाब से उसे अपने लिए बनाया है। इस से मालूम होता है कि ख़ुदा तआला ने तुम्हारी पैदाइश की असली ग़रज़ यह रखी है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत करो। परन्तु जो लोग अपनी इस असली और फ़ित्री ग़रज़ को छोड़ कर हैवानों की तरह ज़िंदगी की ग़रज़ केवल खाना पीना और सौ रहना समझते हैं वे ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से दूर जा पड़ते हैं और ख़ुदा तआला की ज़िम्मेदारी उनके लिए नहीं रहती। वे ज़िंदगी जो ज़िम्मेदारी की है यही है कि مَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ اِلَّا لِيَعۡبُدُوۡنِ पर ईमान ला कर ज़िंदगी का पहलू बदल ले।" यानी मुकम्मल तौर पर इस पर कारबन्द हो जाएँ कि इबादत को अपना मक़सूद-ओ-मतलूब बना ले। फ़रमाया :

"मौत का एतबार नहीं है ... तुम इस बात को समझ लो कि तुम्हारे पैदा करने से ख़ुदा तआला का उद्देश्य यह है कि तुम उसकी इबादत करो और तुम उसके लिए बन जाओ। दुनिया तुम्हारी मक़्सूद बिज़्ज़ात न हो।"

फ़रमाया : "मैं इस लिए बार-बार इस बात को बयान करता हूँ कि मेरे नज़दीक यही एक बात है जिसके लिए इन्सान आया है और यही बात है जिससे वह दूर पड़ा हुआ है।" फ़रमाया "मैं यह नहीं कहता कि तुम दुनिया के कारोबार छोड़ दो। बीवी बच्चों से अलग हो कर किसी जंगल या पहाड़ पर जा बैठो। इस्लाम उसको जायज़ नहीं रखता" दुनिया के कारोबार भी करो, बीवी बच्चों के हक़ भी अदा करो यही इस्लाम की तालीम है। फ़रमाया "और रहबानियत इस्लाम का मंशा नहीं। इस्लाम तो इन्सान को चुस्त और होशयार और मुस्तइद बनाना चाहता है इस लिए मैं तो यह कहता हूँ कि तुम अपने कारोबार को मेहनत से करो। हदीस में आया है कि जिसके पास ज़मीन हो और वह उस का तरद्दुद न करे तो इस से पकड़ होगा। अतः अगर कोई इस से मुराद यह ले कि दुनिया के कारोबार से अलग हो जाए वह ग़लती करता है। नहीं। असल बात यह है कि ये सब कारोबार जो तुम करते हो इस में देख लो कि ख़ुदा तआला की रज़ा मक़सूद हो और इस के इरादा से बाहर निकल कर अपनी अग़राज़-ओ-जज़बात को मुक़द्दम न करो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 181 से 184 ऐडीशन 1984 ई.)

तह बड़े ग़ौर और तवज्जा का मुक़ाम है। अब यह बड़े दर्द से फ़र्मा रहे हैं कि मैं बार-बार इस तरफ़ तवज्जा दिला रहा हूँ, इस बात को मत भोलू कि तुम्हारा जीवन का उद्देश्य क्या है। अगर हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का दावा कर के अपने मक़सद ज़िंदगी को भूल जाते हैं तो हमारी बैअत बेफ़ाइदा है, हमारे अलफ़ाज़ खोखले हैं। अतः हर अहमदी को बड़ा ग़ौर करना चाहिए, सोचें, जायज़ा लें और देखें कि सारे दिन में कितने मिनट अल्लाह तआला की इबादत को देते हैं? क्या चंद मिनट की नमाज़ पढ़ कर और वे भी कुछ समझ कर और कुछ बग़ैर समझे हम अपनी ज़िंदगी के मकसद पैदाइश को पा सकते हैं।

अल्लाह तआला हमें दुनियावी कामों से नहीं रोकता बल्कि एक हक़ीक़ी मोमिन से अपने काम में, अपने कारोबार में, अपनी तिजारतों में, अपनी जिम्मेदारियों में आला मयार पर पहुंचने की तवक़्क़ो रखता है परन्तु साथ ही फ़रमाता है कि इन दुनियावी कामों के साथ अपने मकसद-ए-पैदाइश को नहीं भूलना, अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनी है। मस्जिद बनाई है तो इस की ज़ाहिरी ख़ूबसूरती पर नाज़ाँ न हो जाओ बल्कि उसकी असल ख़ूबसूरती जो हक़ीक़ी इबादत करने वालों से पैदा होती है उसका ख़्याल रखो। तक़्वा पर क़दम मॉरो और तक़्वा के मयारों को हासिल करने की कोशिश करो और जब यह होगा तो तुम हक़ीक़ी इबादत करने वाले कहला सकोगे और फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हक़ीक़ी इबादत गुज़ारों का काम है कि ज़ाहिरी और बातिनी सफ़ाई के भी सामान करें। इसलिए नमाज़ पढ़ने वालों को उमूमी हुक्म है कि अपने कपड़ों को भी साफ़ रखो और हर नमाज़ से पहले वुज़ू करो क्योंकि ज़ाहिरी सफ़ाई का इन्सान के अन्दुरूने पर भी असर होता है। फिर वुज़ू से इन्सान वैसे भी ताज़ा-दम होता है और नमाज़ की तरफ़ सही तवज्जा रहती है।

फिर नमाज़ के हुक्म के साथ एक हुक्म यह भी है कि खाओ पियो लेकिन इसराफ़ न करो। इस का एक तो उमूमी मतलब मुतवाज़िन ख़ुराक से लिया जाता है कि एक मोमिन खाने पीने में इसराफ़ नहीं करता और इस इसराफ़ न करने से इस की सेहत भी ठीक रहती है और इबादत भी सही रंग में हो सकती है। दूसरे यह भी मतलब है कि हक़ीक़ी मोमिन की ज़िंदगी का मक़सद सिर्फ खाना पीना और सौते रहना नहीं है।

जैसा कि अल्लाह तआला ने यह जानवरों की ख़ुसूसीयत वर्णन फ़रमाई है और अभी मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इक़तेबास पढ़ा है। इस में भी आप ने वज़ाहत फ़रमाई है कि यह तो जानवरों का काम है। और इस को मज़ीद खोलें तो इस से यह भी मुराद है कि सिर्फ दुनियावी चीज़ों और चाहतों के पीछे न पड़ो या न पड़े रहो बल्कि अपने मकसद-ए-पैदाइश को पहचानो। एक हक़ीक़ी आबिद बेशक दुनियावी काम भी करता है लेकिन इस में इतना ज़्यादा डूब नहीं जाता कि यह होश ही न रहे कि अब नमाज़ का वक़्त हो गया है और मैंने नमाज़ भी पढ़नी है बल्कि नमाज़ के औक़ात में फ़ौरी ख़्याल आना चाहिए कि अब मेरे दुनियावी कामों का वक़्त ख़त्म और मैंने अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर होना है और नमाज़ अल्लाह तआला का हक़ अदा करते हुए पढ़नी है। यह नहीं कि जल्दी जल्दी पढ़ ली बल्कि सँवार कर पढ़नी है। अपनी ज़ाहिरी सफ़ाई और ज़ीनत के साथ अपने दिल को भी तक़्वा की ज़ीनत से भरना है।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि बेशक तुम्हें खाने पीने की इजाज़त है, हर पाक और तुय्यब चीज़ तुम्हारे लिए बनाई गई है और जायज़ है, तुम्हें कारोबारों और दुनियावी कामों की इजाज़त है लेकिन अगर ये बातें तुम्हें अल्लाह तआला की इबादत से रोकें, मस्जिद में जाने और इबादत की याद भुला दें तो ये इसराफ़ है और अल्लाह तआला को इसराफ़ पसंद नहीं है। लोग कहते हैं कि यह क्या कि पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ कर दीं। आजकल के ज़माने में तो यह बड़ा मुश्किल काम है। इन्सान कामों से किस तरह फ़ुर्सत ले कि पाँच नमाज़ें पढ़े। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह मुश्किल नहीं है बल्कि तुम्हारा सिर्फ़ दुनिया की बातों की फ़िक्र करना और ख़ुदा तआला को भूल जाना इसराफ़ है और फिर यह इसराफ़ आहिस्ता-आहिस्ता तुम्हें अल्लाह तआला से दूर ले जाएगा। जब अल्लाह तआला की नापसंदीदगी का इज़हार इन्सान से हो जाए तो फिर इन्सान तो कहीं का नहीं रहता। कहने को बेशक कहता फिरे कि मैं मुस्लमान हूँ, मैं अहमदी हूँ, मैं ने ज़माने के इमाम की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ बैअत की है लेकिन उसका अमल उसे अल्लाह तआला की नापसंदीदगी का हामिल बना रहा है। अतः अल्लाह तआला ने बड़ी मुतवाज़िन तालीम दी है कि दुनिया भी कमाऊ लेकिन दीन को भी हमेशा सामने रखो, इस में इसराफ़ न करो। और हक़ीक़ी मोमिन वही है जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखता है और जब एक इन्सान हक़ीक़त में दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखता है तो फिर अल्लाह तआला उसके लिए रिज़्क़ के भी नए से नए रास्ते खौलता है और उसके काम में बरकत भी अता फ़रमाता है। अतः जो अल्लाह तआला के हुक्मों पर चले और अपनी ज़िंदगी को अल्लाह तआला के अहकाम के मुताबिक़ ढाले, अपनी इबादतों के मयार हासिल करने की कोशिश करे उसे अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया की ज़रूरीयात भी मिल जाती हैं। हाँ दुनियावी लालच की ख़ाहिशात बढ़ती जाती हैं और अगर यह बढ़ जाएं तो यह ऐसी आग है जो कभी बुझती नहीं है। अगर दीन पर इन्सान क़ायम हो तो यह दुनियावी ख़ाहिशात की हर वक़त भड़क फिर नहीं रहती क्योंकि यह आग तो ऐसी है जो कभी नहीं बुझती और इन्सान इस में भस्म हो जाता है और आख़िरत में भी कुछ नहीं मिलता जो हक़ीक़ी ज़िंदगी है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं अल्लाह की मसाजिद को वही लोग आबाद करते हैं जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं। अतः हमें इन ईमान लाने वालों में से होना चाहिए जो मस्जिदों को आबाद करने वाले हैं और मस्जिदों को आबाद करने वालों की निशानी यह है कि वह एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक इंतेज़ार करते हैं।

(سنن الترمذی ابواب الزھد باب ما جاء فی الحب فی اللہ حدیث 2391، ابواب الایمان باب ما جاء فی حرمۃ الصلاۃ حدیث 2617)

कि कब वक़्त हो और हम नमाज़ के लिए जाएं। अतः यह मक़सद है मस्जिद की तामीर का कि उसे आबाद करना है और किस तरह आबाद करना है।

अतः अब यह मस्जिद बनाने के बाद यहां के रहने वालों का काम है कि उसे आबाद भी करें।

और यही तरीक़ है अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़ब करने का, अपनी भी इस्लाह करने का और अपनी नसलों को भी ख़ुदा तआला के साथ जोड़ने का, अन्यथा मौजूदा ज़माने की चमक दमक हमारी नसलों को दीन से दूर ले जाएगी। बचपन से ही उन्हें मस्जिद के साथ जोड़ने और दीन की एहमीयत बताने की ज़रूरत है और यह माँ बाप दोनों का काम है। इस के साथ ही यह भी याद रखें कि मस्जिद के बनने से जैसा कि मैंने पहले भी कहा और अब उद्घाटन से जमाअत का मज़ीद परिचय होगा। मस्जिद का और इस्लाम का परिचय होगा तो तब्लीग़ के रास्ते खुलेंगे, मज़ीद राबते भी होंगे। अतः उनसे फ़ायदा उठा कर इस्लाम और अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाना भी हर अहमदी का काम है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "उस वक़्त हमारी जमाअत को मसाजिद की बड़ी ज़रूरत है। यह ख़ाना ख़ुदा का होता है। जिस गांव या शहर में हमारी मस्जिद क़ायम हो गई तो समझो कि जमाअत की तरक़्क़ी की बुनियाद पड़ गई ... लेकिन" फ़रमाया "शर्त यह है कि क़ियाम मस्जिद में नीयत ब-इख़लास हो। केवल अल्लाह के लिए उसे किया जावे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 119 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है मस्जिद से जमाअत की तरक़्क़ी की बुनियाद पड़ गई। अगर यहां के अहमदियों की कोशिशें इख़लास से होंगी, इबादतों के मयार होंगे तो इन शा अल्लाह जमाअत की तरक़्क़ी की यहां भी समझें कि अब बुनियाद पड़ गई है। अतः अपनी इबादतों और इख़लास के मयार बढ़ाते चले जाएं। अपनी नसलों में भी इस इख़लास और दुआ की एहमियत और इबादत की एहमियत को मुंतक़िल करते चले जाएं तो इस माद्दी दुनिया के दिलदादों में भी हम इन्क़िलाब पैदा होता देखेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मस्जिदों की असल ज़ीनत इमारतों के साथ नहीं है बल्कि उन नमाज़ियों के साथ है जो इख़लास के साथ नमाज़ पढ़ते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 170 ऐडीशन 1984 ई.)

अल्लाह तआला सबको तौफ़ीक़ दे कि वे इख़लास के साथ नमाज़ें पढ़ने वाले हों और इस मस्जिद को आबाद करने वाले हों। अल्लाह तआला हमारी दुआओं और इबादतों को भी क़बूल फ़रमाए।

★ ★ ★

### अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

"मस्जिद फ़तह अज़ीम" को बिजली के रंग बिरंगे क़ुमक़ुमों से सजाया गया था। जिसके बायस मस्जिद के इर्दगिर्द का बड़ा अहाता भी रोशन था। अपने प्यारे आक़ा के इस्तक़बाल और हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक की एक झलक देखने के लिए अमरीका के इस ख़ित्ता के दूर दराज़ शहरों और बस्तियों में आबाद हुज़ूर अनवर के चाहने वाले सैंकड़ों की संख्या में सुबह से ही यहां पहुंचना शुरू हो गए थे। पुरुषों महिलाओं और बच्चों बूढ़ों का एक हुजूम था जो अपने प्यारे और महबूब आक़ा की ज़यारत के लिए बेताब था।

ज़ायन की जमाअत के इलावा ये उश्शाक ऑस्टन, बाल्टीमोर, बोस्टन, बरोकलेन, बे-प्वाईंट, सैंटर्ल जर्सी, शिकागो, कोलंबस, हवाई, डेटन, डेट्रॉइट, डलास, अटलांटा, हार्ट फ़ोर्ड, ह्वीसटन, इंडियाना, कंसास सिटी, सयाटिल, सेंट लूइस, लाँग आईलैंड, मेरी लैंड, आइयोवा, मियामी, मिलवाकी, नॉर्थ जर्सी, नॉर्थ वर्जीनिया, पोर्ट लैंड, न्यूयार्क, वाशिंगटन, रिचमंड, सेकरामंटो, फ़लाडलेफ़या, पिट्सबर्ग, फ़ीनेक्स, औशकोशि, ओरलैंडो, सेंट पाल, साउथ वर्जीनिया, तोसान, विलंगबरो, यार्क औरसा कियूज़ की जमाअतों से भी आए थे।

फिर कुछ जमाअतों से अहबाब बड़े लंबे और तवील सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा के इस्तक़बाल के लिए ज़ायन पहुंचे थे। अल्-अबामा से आने वाले 782 मील, शारकट से आने वाले 813 मील, बरोकलेन आने वाले 839 मील, एल्बानी से आने वाले 864 मील और डलास आने वाले 961 मील का सफ़र तै कर के ज़ायन पहुंचे थे।

इसी तरह लास वेगास से आने वाले अहबाब 1778 मील, तोसान से आने वाले 1784 मील, सयाटिल से आने वाले 2014 मील, लास अंजलीज़ से सफ़र करके आने वाले 2046 मील और सेकरामंटो की जमाअत से आने वाले अहबाब 2072 मील की लम्बी यात्रा करके अपने प्यारे आक़ा के दीदार और इस्तक़बाल करने के लिए ज़ायन पहुंचे थे।

इन अहबाब पुरुषों महिलाओं में से एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी जिन्हों ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार हुज़ूर अनवर का दीदार करना था और अपने प्यारे आक़ा को अपने क़रीब से देखना था। उनका एक-एक लम्हा बड़ी बेताबी से गुज़र रहा था। एम.टी.ए. के कैमरे इस्तक़बाल के इस सारे दृश्य को फिल्मा रहे थे। प्रत्येक की नज़र उस बैरूनी गेट पर लगी हुई थी जहां से किसी वक़्त भी हुज़ूर अनवर की गाड़ी इस अहमदिया सैंटर में दाख़िल होने वाली थी।

आख़िर वह अत्यधिक बाबरकत और प्रत्येक के लिए यादगार और तारीख़ साज़ लम्हा आ पहुंचा। ठीक 7 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए और अपना हाथ बुलंद कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा। दूसरी तरफ़ भी अहबाब के हाथ बुलंद हो गए। हुज़ूर अनवर अपने उश्शाक को देख रहे थे और उन उश्शाक और ख़िलाफ़त के फ़िदाई परवानों की नज़रें अपने महबूब इमाम के चेहरा मुबारक पर लगी हुई थीं। बहुतों की आँखों में आँसू उमड़ आए थे। अहबाब नारे बुलंद कर रहे थे। महिलाएं एक दूसरे अहाता में थीं। हुज़ूर अनवर अपने उश्शाक के दरमयान से गुज़रते हुए महिलाओं की तरफ़ तशरीफ़ ले आए और अपना हाथ बुलंद करते हुए अस्सलामो अलैकुम कहा। प्रत्येक तरफ़ से वाअलैकुम अस्सलाम की आवाज़ें बुलंद हुईं, ख़वातीन और बच्चियां अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा को ख़ुश-आमदीद कह रही थीं। आज ज़ायन की सरज़मीन पर भी इशक़-ओ-मुहब्बत की नई दास्तानें रक़म हो रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के क़ियाम का इंतिज़ाम "मस्जिद अज़ीम" के बैरूनी अहाता में वाक़्य गेस्ट हाऊस में किया गया था। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए 8 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

संक्षिप्त तारीख़ जमाअत अहमदिया अमरीका

जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में साल 1920 को एक ख़ास एहमियत हासिल है जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद पर लंदन से हज़रत डाक्टर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो अमरीका के पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 26 जनवरी 1920 को बर्तानिया की बंदरगाह liverpool से रवाना हुए और 21 दिन के सफ़र के बाद 15 फ़रवरी 1920 ई. को अमरीका की बंदरगाह फ़लाडलाफ़ीया पर उतरे लेकिन आपको मुल्क के अंदर दाख़िल होने से रोक दिया गया और फ़ैसला किया गया कि आप जिस जहाज़ में आए हैं इसी में वापस चले जाएं। हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस फ़ैसला के ख़िलाफ़ महकमा आबाद कारी वाशिंगटन में अपील की। इस पर आपको समुंद्र के किनारे एक मकान में बंद कर दिया गया और क़ैद कर दिया गया। इस मकान से बाहर निकलने की सहायता थी। परन्तु छत पर टहल सकते थे उस का दरवाज़ा दिन में सिर्फ दो मर्तबा खुलता था।

इस मकान में कुछ यूरोपीयन भी नज़रबंद थे। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अवसर से फ़ायदा उठा कर अपने साथी क़ैदियों को तब्लीग़ करनी शुरू कर दी जिसके नतीजा में दो माह के अंदर पंद्रह क़ैदियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

अमरीका की सरज़मीन पर बैअत करने वाले पहले अहमदी का नाम Mr. r.i.rochford था इसके इलावा बैअत करने वालों का ताल्लुक़ जमैका ब्रिटिश गयाना, पोलैंड, रशिया, जर्मनी azores बलजीयम, पुर्तगाल, इटली और फ़्रांस से था।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को जब यह इत्तिला मिली कि हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को अमरीका में क़ैद कर दिया गया है तो आपने अमरीकी हुकूमत के इस रवैय्या पर सख़्त अफ़सोस का इज़हार करते हुए फ़रमाया "अमरीका जिसे ताक़तवर होने का दावा है इस वक़्त तक उसने माद्दी सल्तनतों का मुक़ाबला किया और उन्हें शिकस्त दी होगी। रुहानी सलतनत से इस ने मुक़ाबला कर के नहीं देखा। अब अगर उसने हमसे मुक़ाबला किया तो उसे मालूम हो जाएगा कि हमें वह हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है। हम अमरीका के इर्दगिर्द के इलाक़ों में तब्लीग़ करेंगे और वहां के लोगों को मुस्लमान बना कर अमरीका भेजेंगे और उनको अमरीका नहीं रोक सकेगा। और हम उम्मीद रखते हैं कि अमरीका में एक दिन لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।

मई 1920 में अमरीकी हुकूमत की तरफ़ से हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो से पाबंदी उठा ली गई जिसकी फ़ौरी वजह यह बनी कि ऐसा न हो कि आप नज़रबंद समस्त क़ैदियों को मुस्लमान बना लें। इसलिए हुक्काम ने आपके अमरीका में दाख़िल होने का फ़ैसला कर दिया। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने न्यूयार्क में एक मकान किराए पर लेकर जमाअत के मिशन का आगाज़ किया। फिर 1921 ई. में आप शिकागो मुंतक़िल हो गए और बाक़ायदा एक इमारत ख़रीद कर जमाअती मर्कज़ क़ायम किया। यह मकान बतौर मिशन हाऊस, रिहायश और बतौर मस्जिद प्रयोग होता था जुलाई 1921 ई. में आपने उसी मिशन हाऊस से जमाअत अमरीका के रिसाला muslim sunrise का इजरा किया। यह रिसाला आज भी बाक़ायदगी से शाय हो रहा है।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अमरीका के समस्त बड़े शहरों और प्रत्येक स्टेट में अहमदिया जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं। अमरीका में वक़्त 58 मुक़ामात पर मुस्तइद और फ़आल जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं 56 मसाजिद और 60 मिशन हाऊसज़ हैं। बाअज़ मुक़ामात पर बड़ी वसीअ-ओ-अरीज़ इमारतें और मसाजिद तामीर की गई हैं। नई मसाजिद और मिशन हाऊसज़ की तामीर का सिलसिला मुसलसल जारी है।

यह वही है जहां 1920 में जमाअत अहमदिया के पहले मुबल्लिग़ हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को मुल्क के अंदर दाख़िल होने से रोक दिया गया था और आपको क़ैद कर दिया गया था। इस वक़्त हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था कि "अमरीका हमें हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता अमरीका में एक दिन لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।"

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सारे अमरीका में गांव गांव शहर शहर अहमदी आबाद हैं और अमरीका के चप्पा चप्पा पर दिन रात لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ की सदा गूंज रही साल 2020 ई. में जमाअत अमरीका के क़ियाम पर सौ साल मुकम्मल हुए हैं और जमाअत अमरीका अपनी सद साला जुबली मना रही है और जमाअत की मुख़्तलिफ़ तक़रीबात और प्रोग्राम जारी हैं।

जान अलेक्जेंडर डोवी के शहर zion में मस्जिद फ़तह अज़ीम की तामीर भी अमरीका की सद साला जुबली की तक़रीबात का एक अत्यधिक अहम प्रोग्राम है। इस का उद्घाटन इन शा अल्लाह इस दौरा में होगा जहां उसकी मुकम्मल तफ़सील दर्ज की जाएगी।

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ज़ायन की सरज़मीन से शुरू होने वाला यह दौरा अत्यधिक ग़ैरमामूली

बरकतों और कामयाबियों का हामिल दौरा है और उसके नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया की अज़ीमुश्शान प्रगतियों और फ़ुतूहात के नए दरवाज़े खुलने वाले हैं और जमाअत अहमदिया अमरीका कामयाबियों के एक नए दौर में दाख़िल होने वाली है और यही तक़दीर-ए-इलाही है जो ज़ाहिर हो रही है।

27 सितंबर 2022-ए- (मंगल के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अदायगी में मसरूफ़ियत रही।

मुआइना नुमाइश

इसके बाद प्रोग्राम के मुताबिक़ दोपहर एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम से जुड़ी नुमाइश हाल में तशरीफ़ ला कर नुमाइश का मुआइना फ़रमाया। इस नुमाइश को निम्नलिखित 10 हिस्सों में तक़सीम किया गया है।

अल्लाह तआला, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, क़ुरआन-ए-करीम और तराजुम, इमाम महदी के बारे में जुमला मज़ाहिब की भविष्यवाणी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दआवी और निशानात, डाक्टर इलैगज़ेंडर डोई शदीद मुआनिद इस्लाम और उसकी इस्लाम दुश्मनी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पुर मआरिफ़ जवाब और दावत मुबाहला, डाक्टर डोई का उरूज और इबरतनाक अंजाम, फ़तह अज़ीम का जारी सफ़र।

इन समस्त दस मज़ामीन को इलेक्ट्रिक रूप में प्रत्येक हिस्सा में एक बड़ी टी.वी स्क्रीन video looping के ज़रीया ज़ाहिर किया गया है। प्रत्येक हिस्सा में टी.वी स्क्रीन के नीचे शीशे के एक showcase में इस हिस्सा के मज़मून के मुताल्लिक़ जुमला नवादिरात रखे गए हैं। इस नुमाइश में जो अहम अश्याय रखी गई हैं इन में डाक्टर डोई के सौ साल पुराने नवादिरात की तसावीर, रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ के वे इबतिदाई शुमारे रखे गए हैं जिन में डाक्टर डोई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चैलेंज दिया था और इस की हलाकत के बारे में भविष्यवाणी फ़रमाई थी। यह 1902 ई., 1905 ई. और 1907 ई. के शुमारे हैं।

डाक्टर डोई के रिसाले "leaves of healing" के वे शुमारे भी रखे गए हैं जिनमें इस ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में गंद उछाला था। ये शुमारे इसलिए रखे गए हैं ताकि यह बताया जाए कि डाक्टर डोई के इस बुग़ज़-ओ-इनाद के मुक़ाबला में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ को हथियार के तौर पर पेश किया। 1902 ई. और 1903 ई. के वे असल अख़बारात भी रखे गए हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ वे चैलेंज भी रक़म है जो आप ने डोई को संबोधित करते होते हुए दिया था। अख़बारात में library digest और तीन मज़ीद अख़बारात शामिल हैं।

अख़बार boston herald सफ़ा बड़ा कर के 5X7 फुट के साइज़ में दीवार पर आवेज़ां किया गया है जिसकी सुरख़ी (headline)निमंलिखित है "great is mirza ghulam ahmad" हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सैक्शन में हुज़ूर अलैहिस्सलाम का एक कोट भी शीशे के शोकेस में रखा गया है जो आप अलैहिस्सलाम ज़ेब-ए-तन फ़रमाते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में ग़ैरों की आरा में एक काबिल-ए-ज़िक्र emperor ming हैं जिन्हों ने 1573 ई. में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में एक चाइनीज़ ज़बान के अलफ़ाज़ पर मुश्तमिल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदह में नज़म लिखी है जो चीन के देश में अढ़ाई हज़ार मसाजिद में मौजूद है इस का अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया है।

अख़बार boston herald के 28 जून 1907 ई. के शुमारा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ हज़ूर दीगर पेशगोइयों का वर्णन है जिनमें ज़लाज़िल, दमदार सितारा और चांद सूरज गरहन और ताऊन इत्यादि शामिल हैं। इन सब के अख़बारी नुस्ख़ाजात showcase में रखे गए हैं।

नुमाइश की एक अत्यधिक अहम चीज़ kiosk है जिसमें 160 अख़बारी तराशे जमा किए गए हैं और world map के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को touch करने से ये समस्त तराशाजात 60 इंच की टीवी स्क्रीन पर वाज़िह हो जाते हैं और साफ़ पढ़े जाते हैं। ये समस्त तराशा जात 1902 ई. से लेकर 1909 की दहाई में अमरीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, बर्तानिया, असकाट लैंड और इंडिया के अख़बारों में शाय हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान kiosk को launch किया और डाक्टर डोई के ज़िक्र, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी और डोई के इबरतनाक अंजाम के हवाला से मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के अख़बारात का मुशाहिदा किया। जिनमें alaska nebraska न्यूयार्क और बोस्टन इत्यादि के अख़बार शामिल थे।

नुमाइश में दीवार पर जो मुख़्तलिफ़ टीवी स्क्रीन लगाए गए हैं उनमें एक टी.वी स्क्रीन पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह के14 तराशे ख़ुदबख़ुद मंज़र-ए-आम पर आते हैं और मुख़्तलिफ़ देशों में शाय होने वाले अख़बारात चंद मिनटों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह और तसदीक़ का ऐलान कर रहे होते हैं।

एक टी.वी स्क्रीन 20 अख़बारात के वे तराशे हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के डोई को दीए जाने वाले मुबाहला, चैलेंज का वर्णन है। ये तराशे टी.वी स्क्रीन पर बग़ैर कोई बटन दबाए या टीवी स्क्रीन को touch किए तबदील होते हैं। टी.वी स्क्रीन के सामने हाथ हिला कर इशारा करें तो अगला तराशा जाता है। इस तरह सिर्फ हाथ के इशारा से जो तराशा भी आप देखना चाहते हैं वे आपके सामने आ जाएगा।

एक टी.वी स्क्रीन पर हाथ के इशारा से बदलते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वे इक़तेबासात हैं जिनमें ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ के बारे में तालीमात वर्णन की गई हैं। एक कालम पर newyork times की वे इबारत दर्ज है जिसका अनवान rival prophets है। इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुरज़ोर अलफ़ाज़ में डोई को चैलेंज दिया है।

जिस showcase में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोट आवेज़ां है इस के ऊपर दीवार पर यह दर्ज है "बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान डोई के नवादिरात देख कर फ़रमाया कि मूसा के ज़माने में फ़िरऔन था जिसकी mummy को महफ़ूज़ किया गया। आज (डोई के) इन नवादिरात को महफ़ूज़ कर के आपने इस निशान को महफ़ूज़ कर लिया है।

नुमाइश का एक हिस्सा क़ुदरत सानिया के हवाला से तैयार किया गया था कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त अहमदिया के ज़रीया जमाअत अहमदिया मुसलसल तरक़्क़ी कर रही है तो दूसरी तरफ़ डोई और उसकी जमाअत का वजूद हमेशा के लिए ख़त्म हो चुका है। showcase में खलिफ़ा की बाअज़ कुतुब रखी गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यह कुतुब देखकर फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

रज़ियल्लाहु अन्हो और ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की कुतुब भी शामिल करें।

चांद सूरज गरहन के हवाला से पुराने अख़बारात के तराशे रखे गए थे 1895 ई. के अख़बारी तराशे देखकर हुज़ूर ने फ़रमाया कि मग़रिब के लिए 1895 ई. में ग्रहण लगा था और अहल-ए-मशरिक़ के लिए 1894 ई. में ग्रहण लगा था।

नुमाइश के आख़िरी हिस्सा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोया "ग़ुलाम अहमद की जय" को स्क्रीन पर दिखाया गया था। और तबर्रुकात को ज़ाहिर किया गया था। हुज़ूर अनवर ने उसे देखकर फ़रमाया कि "मेरे हाथ में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो तबर्रुकात हैं" हुज़ूर अनवर ने अपने हाथ में पहनी हुई दोनों अँगूठीयों "الیس اللہ بکافٍ عبدہ' और "मौला बस" की तरफ़ इशारा किया।

इस नुमाइश का मुकम्मल इंतेज़ाम आदरणीय अनवर महमूद ख़ान साहब नैशनल सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद और उनकी टीम ने बड़ी मेहनत से किया। आख़िर पर इस टीम के मैंबरान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तसावीर बनवाने की सआदत पाई।

मस्जिद फ़तह अज़ीम की तख़्ती की निक़ाब कुशाई और मीनार का संग-ए-बुनियाद

नुमाइश के मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बैरूनी दीवार पर लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मीनारा का संग-ए-बुनियाद रखा। शहर की इंतेज़ामिया की तरफ़ से मस्जिद के साथ मीनारतुल मसीह की तर्ज़ पर एक मीनारा तामीर करने की भी मंज़ूरी मिली है। इस की उंचाई 70 फ़ुट होगी।

मस्जिद फ़तह अज़ीम और इस से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर को एक नक़्शा की सूरत में बोर्ड पर आवेज़ां किया गया था। हुज़ूर अनवर ने यह नक़शाजात देखे। आदरणीय फ़लाहउद्दीन शमस साहिब नायब अमीर यू. एस. ए. ने इस प्राजैक्ट के हवाला से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ उमूर अर्ज़ किए और बताया कि हमारे इस क़ता ज़मीन का कुल रकबह 10 एकड़ है जिसमें से इस वक़्त अढ़ाई एकड़ ज़ेर-ए-इस्तेमाल है। मस्जिद और दफ़ातिर की तामीर है गेस्ट हाऊस की तामीर है एक वसीअ पार्किंग एरिया बनाया गया है और इसी अढ़ाई एकड़ रकबा में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मारकीज़ भी लगाई गई हैं।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि जो बाक़ी साढ़े सात एकड़ रकबा है वह इस नक़्शा के मुताबिक़ किस तरफ़ है तो इस पर मौसूफ़ ने इस हिस्सा की निशानदेही करते हुए बताया कि इस तरफ़ है और इस रकबा पर दरख़्त लगे हुए हैं। हुज़ूर अनवर ने पार्किंग एरिया के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया तो अर्ज़ किया गया कि मस्जिद के पार्किंग एरिया में 95 गाड़ियां आ सकती हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर का मुआइना फ़रमाया। नुमाइश हाल के इलावा लाइब्रेरी है। दफ़ातिर में, दफ़्तर सदर जमाअत और लजना के दफ़ातिर शामिल हैं। चिल्डर्न क्लास के लिए भी एक कमरा मुहय्या किया गया है। आडीयो वीडीयो रुम भी है और एक लांडरी रुम भी बनाया गया है। लिफ़्ट की सहूलत भी मुहय्या की गई है। दो स्टोरेज रूमज़ भी हैं।

हुज़ूर अनवर फ़्लोर (basement) में भी तशरीफ़ ले गए जहां एक मल्टी परपज़ हाल (multi purpose hall) तामीर किया गया है। जिसका रकबा 2451 मुरब्बा फ़ुट है। इस वक़्त उसे नमाज़ की अदायगी के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इस हाल में 300 अफ़राद नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस हाल में मर्दों और औरतों के लिए अलैहदा अलैहदा वाश रूमज़ बनाए गए हैं और कमर्शीयल किचन भी मौजूद है।

मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

रीलीजन न्यूज़ सर्विस की सहाफ़ी का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू :

रीलीजन न्यूज़ सर्विस (religion news service) की एक सहाफ़ी emily miller हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू करने के लिए आई हुई थीं। मौसूफ़ा के अमरीका में लाखों फालोवरज़ हैं। ये सहाफ़ी ख़ातून मस्जिद फ़तह अज़ीम के पस-ए-मंज़र और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डाक्टर डोई के दरमयान मुबाहला पर एक मज़मून लिख रही हैं।

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां इंटरव्यू का प्रोग्राम था।

* इंटरव्यू के आग़ाज़ में जर्नलिस्ट ने पहला सवाल यह किया कि इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए हुज़ूर का यहां आना क्या एहमियत रखता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम जहां भी मस्जिद बनाते हैं उमूमन वहां की जमाअत मुझ से पूछती है कि क्या मेरा वहां आना मुम्किन है? जर्मनी हो या बर्तानिया हो या कोई और हो। covid से पहले मैं मसाजिद के उद्घाटन के लिए जाया करता था लेकिन यहां zion में एक ख़ास चीज़ है जैसा कि आपने नुमाइश में भी देखा है तो यह भी मुख़्तलिफ़ वजूहात में से एक वजह है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं आम तौर पर मसाजिद का उद्घाटन करता हूँ और वहां अपनी जमाअत के अफ़राद से मिलता हों। इस तरह उनकी हौसला-अफ़ज़ाई होती है और मैं उन्हें नसाएह करता हूँ और बताता हूँ कि मस्जिद की तामीर का मक़सद किया है। यह न हो कि आप सिर्फ उसको आरिज़ी तौर पर या कुछ ख़ास होने की वजह से मनाएं बल्कि असल यह है कि हमारी ज़िंदगी और हमारे दीन का मक़सद अल्लाह तआला की इबादत करना है मसाजिद इसी मक़सद के लिए तामीर की जाती हैं और मैं अपने लोगों को याद दिलाता हूँ कि उन्हें सिर्फ मस्जिद की तामीर पर ख़ुश नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें हक़ीक़त में यह एहसास होना चाहिए कि उनकी ज़िंदगी का मक़सद क्या है, तो इस तरह उनकी राहनुमाई होती है और फिर वे अपने आप में तबदीलीयां पैदा करते हैं और समझते हैं कि उनके फ़रायज़ और ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं।

*जर्नलिस्ट ने दूसरा सवाल किया कि इस मस्जिद का नाम फ़तह अज़ीम है इस से क्या मुराद है? फ़तह किस की है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अगर आप ये नुमाइश देखी तो आपको समझ आएगी कि मसीह मुहम्मदी और तथाकथित मसीह का मुक़ाबला कैसे शुरू हुआ, इसलिए यही दुआओं का मुक़ाबला था जिसका ऐलान सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने किया। पहले आप ने डोई को नसीहत की कि तुम अम्बिया और मुक़द्दस लोगों के ख़िलाफ़ ये ग़लीज़ ज़बान न प्रयोग करो लेकिन वे आपके ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करता रहा। यहां तक कि इस ने कह दिया कि मैं दुआ करूँगा कि पूरी उम्मत मुस्लिमा और प्रत्येक मुस्लमान तबाह हो जाएँ। इस पर जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने फ़रमाया कि पूरे मज़हब को तबाह करने के बजाए हम दो लोग हैं इसलिए एक दूसरे के ख़िलाफ़ दुआ करते हैं। और फिर दुआओं का मुक़ाबला शुरू हो गया था और ख़ुदा तआला ने आपको बताया कि इस मुबाहला में फ़तह तुम्हारी होगी और फिर बिलआख़िर ऐसा ही हुआ। तो "फ़तह अज़ीम" का यह नाम आपको अल्लाह तआला ने बताया था। इसलिए जब हमने ये मस्जिद बनाई तो जमाअत ने इस का नाम रखने की दरख़ास्त की तो इस पर मैंने कुछ नाम तजवीज़ किए और जमाअत से कहा कि कोई ऐसा नाम मुंतख़ब करें जिसको अमरीका के बाशिंदे आसानी से बोल सकते हूँ लेकिन मुक़ामी जमाअत ने इसरार किया कि यह नाम "फ़तह अज़ीम" इस मस्जिद के लिए मुनासिब है फिर मैंने उसकी मंज़ूरी दी तो इस तरह इस मस्जिद का नाम "फ़तह अज़ीम" रखा गया।

*फिर जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि अमरीका के बाशिंदों के लिए इस मुबाहला का वाक़िया जानना क्यों ज़रूरी है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह केवल अमरीका के बाशिंदों के लिए ही अहम नहीं है बल्कि यह सब के लिए अहम है। प्रत्येक अमरीकी तारीख़ में दिलचस्पी नहीं रखता लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बहुत शौक़ीन हैं वे सोचते हैं कि उन्हें अपने मुल्क में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों की तारीख़ और मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और उनके पस-ए-मंज़र के बारे में जानना चाहिए। इस लिए जो लोग दिलचस्पी रखते हैं वह यहां आएं और हमारी तारीख़ जानें और यह कि किसी एक मज़हब की फ़तह नहीं है दरअसल लोगों को यह बताने की फ़तह है कि ख़ुदा का सच्चा बंदा कौन है और यह कि एक दूसरे के ख़िलाफ़ कोई गाली ग्लोच नहीं करनी चाहिए। हमें समस्त मज़ाहिब का एहतिराम करना चाहिए। यही क़ुरआन-ए-करीम की तालीम है और यही बात सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने कही है कि तुम एक दूसरे का एहतेराम करो और यह कि इन्सान की पैदाइश का असल मक़सद अल्लाह की इबादत है इस लिए आपका जो भी तरीक़ा है जिस मज़हब को भी आप मानते हैं आप इस असल मक़सद के मुताबिक़ अमल करो लेकिन दूसरे लोगों के ख़िलाफ़ ग़लीज़ ज़बान या गाली ग्लोच का प्रयोग न करें। तो अब जब हम इस तारीख़ को लोगों के सामने वर्णन करेंगे। तारीख़ से दिलचस्पी रखने वालों और मज़हब से दिलचस्पी रखने वालों को मालूम

होगा कि यह सब कुछ ऐसा ही हुआ।

*इसके बाद जर्नलिस्ट के इस सवाल पर कि आपके मुताबिक़ लोगों पर इस मुबाहला के क्या असरात होंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारा काम इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाना है और इस्लाम कहता है कि देन में कोई जबर नहीं है और आप किसी को अपना मज़हब तबदील करने पर मजबूर नहीं कर सकते और जो लोग इस्लाम क़बूल नहीं करते वे कम अज़ कम ये समझ लेंगे कि इस्लाम हमें एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने और अपने फ़राइज़ अदा करने का कहता है। बांई सिलसिला अहमदिया ने कहा कि मेरे आने का मक़सद लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाना और अल्लाह तक पहुंचाना है उन्हें यह समझाना है कि अल्लाह की इबादत कैसे करनी है और अल्लाह की इबादत क्यों करनी है और अपने ख़ालिक़ के सामने झुकना है और दूसरा मक़सद लोगों को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने का एहसास दिलाना है लोगों को एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। उन्हें एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करना चाहिए और यही बात क़ुरआन-ए-करीम सिखाता है और यही हम मानते हैं और यही है जिसकी हम तब्लीग़ करते हैं।

* फिर जर्नलिस्ट ने आख़िरी प्रशन यह किया कि क्या अब दुनिया में organized religion अर्थात मुनज़्ज़म मज़हब का कोई किरदार है क्या मज़हब अमन की आवाज़ बन सकता है?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम कहते हैं कि दीन का उद्देश्य किसी को डराना नहीं है जैसा कि मैं पहले आपको बता चुका हूँ कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक दो उद्देश्यों के लिए दुनिया में ज़ाहिर हुए और आपने इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात को ज़िंदा करने का दावा किया और यह तालीम दो उसूलों पर मुश्तमिल है हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद। इसलिए अगर आप इन दोनों फ़रायज़ को जानते हैं तो फिर हम से डरने की ज़रूरत नहीं। हम ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। हम जिसकी तब्लीग़ करते हैं इस पर अमल करते हैं हम इस किस्म के जुनूनी मुल्ला, शरपसंद नहीं हैं जो समाज की शांति ख़राब कर रहे हैं।

हम कहते हैं कि हमें अमन से रहना चाहिए और हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। यहां तक कि क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि तुम एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करो। क़ुरआन-ए-करीम यह भी कहता है कि तुम बुत परस्तों के ख़िलाफ़ कोई बदज़बानी भी न करो क्योंकि वह इंतेक़ाम में अल्लाह के ख़िलाफ़ वही ज़बान प्रयोग करेंगे। इसलिए डरने की ज़रूरत नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जहां तक मस्जिद का उद्देश्य है और हम किस तरह रहते हैं हम यहां क्या करने जा रहे हैं में अपने ख़िताब में भी वर्णन करूँगा।

यह इंटरव्यू 6 बजकर 20 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के मुताबिक़ फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज शाम के सैशन में 23 फ़ैमिलीज़ के 152 अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी अफ़राद ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट अता फ़रमाए। आज ज़ाइन (zion) की जमाअत के इलावा indiana oshk osh chicago milwauk ee iowa seattle si licon valley की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ ने भी शरफ़ मुलाक़ात पाया। बाअज़ फ़ैमिलीज़ बड़ा लम्बा सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। सयाटिल से वालेला 2014 मील और सिलीकोनवैली से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2190 मील का सफ़र तै कर के आई थीं। मुलाक़ातों का प्रोग्रा 8 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

(शेष आगे ...)

रिपोर्ट : आदरणीय अदुल माजिद ताहिर साहिब
(ऐडीशनल वकीलअल्-तिबशीर् लंदन, यू.के)
(अख़बार बदर उर्दू 13 अक्तूबर 2022)

★ ★ ★

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर गर्वनमैंट यह कहती है कि बंद कर दें तो बंद कर दें लेकिन पहले सही तरह उसकी तहक़ीक़ात कर लें और पता कर लें कि उसकी details क्या हैं । ठीक है? फिर करें।

विभाग तब्लीग़ के एक मुरब्बी साहिब से हुज़ूर अनवर ने इस्तफ़सार फ़रमाया कि इस साल कितनी बैअतों का टार्गेट रखा हुआ है? इस पर उन्होंने बताया हुज़ूर इस साल का टार्गेट 150 है और अभी जुलाई से दिसंबर तक 64 बैअतें हो गई हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अच्छा मा शा अल्लाह। इस में से शादी कराने वालों की कितनी बैअतें हैं और जो पढ़ लिख के समझ के आए हैं उनकी बैअतें कितनी हैं? इस पर मुरब्बी साहिब ने जवाब दिया कि ज़्यादा संख्या वही है जो पढ़ लिख के आए हैं।

बिभाग तारीख़ के एक मुरब्बी साहिब ने बताया कि उन्हें यू.के जमाअत की तारीख़ की पहली जिल्द तैयार करने की तौफ़ीक़ मिली है। तथा उन्हें voice of islam रेडीयो में बतौर परेज़िंटर प्रोग्रामज़ पेश करने की भी तौफ़ीक़ मिल रही है। इसी तरह ख़ुद्दामुल अहमदिया तब्लीग़ डिपार्टमैंट में भी कुछ न कुछ काम करने का अवसर मिल जाता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अच्छा मा शा अल्लाह। अच्छा है तहक़ीक़ी मज़मून लिखते रहा करो। disappoint न होना, कोई मज़मून शाय होता है या नहीं होता, किसी को पसंद आता है या नहीं आता। जिस तरह तहक़ीक़ कर रहे हो अपनी तहक़ीक़ करो और मज़मून लिखते रहा करो। hayes जमाअत के मुरब्बी साहिब से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नौजवानों को क़रीब लाने की ज़्यादा कोशिश करें। इन दिनों में कम अज़ कम नौजवानों को नमाज़ों का आदी बना दें।

अल्लाह तआला से ज़ाती ताल्लुक़ बनाने के हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आजकल तो वक़्त काफ़ी मिल जाता है। आजकल के हालात के लिए एक घंटा तो कोई मुश्किल नहीं। आप लोगों को एक घंटा तो नफ़ल पढ़ने चाहिऐं सुबह और बाक़ी आम दिनों में भी कोशिश करके इस को maintain रखें। असल चीज़ तो दुआ है। दुआ से काम होने हैं इं शा अल्लाह तआला। दुआओं की तरफ़ तवज्जा दें। अपने ताल्लुक़ बिल्लाह को बढ़ाईं तो यही असल चीज़ है हमारे लिए। दुआओं और इस्तग़फ़ार पर ज़ोर दें ज़्यादा।

वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे में पहले नंबर पर आने पर हुज़ूर अनवर ने अमीर साहिब यू.के को संबोधित हो कर फ़रमाया कि आप लोग वक़्फ़ जदीद में नंबर एक आ ही गए इस दफ़ा दुबारा। काफ़ी कोशिश की आप लोगों ने, काफ़ी बड़ी कलेक्शन की है। वैसे जर्मनी वालों ने भी उतनी ही तक़रीबन कलेक्शन कर ली थी अगर आप थोड़ी करते तो शायद जर्मनी ऊपर आ जाता लेकिन आपकी इस दफ़ा मेहनत ज़्यादा थी उसकी वजह से जर्मनी बावजूद अपनी पूरी कोशिश के पीछे ही रहा है, आपसे काफ़ी पीछे रह गया।

हुज़ूर अनवर ने लजना की मेहनत और उनकी कलेक्शन की तारीफ़ करते हुए फ़रमाया : लजना ने वक़्फ़-ए-जदीद का पाया यहां ऊंचा कर दिया। लजना ने काफ़ी मेहनत की है। इस दफ़ा लगता है आप लोगों ने भी लजना से कुछ सीखा है मेहनत करना। (धन्यवाद सहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 5 अक्तूबर 2021 ई.)

★ ★ ★

## 127वां जलसा सालाना क़ादियान 23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 10 November 2022 Issue No. 45

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

# आजकल आप लोगों को एक घंटा तो नफ़्ल पढ़ने चाहिऐं सुबह और बाक़ी आम दिनों में भी कोशिश करके इसको maintain रखें

## असल चीज़ तो दुआ है, दुआ से काम होने हैं इन शा अल्लाह तआला, दुआओं की तरफ़ तवज्जा दें

## अपने अल्लाह से प्रेम को बढ़ाएं तो यही असल चीज़ है हमारे लिए, दुआओं और अस्तग़फ़ार पर ज़ोर दें ज़्यादा

---

## हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की लंदन में ख़िदमत करने वाले मुबल्लेग़ीन सिलसिला के साथ आनल लाइन मुलाक़ात

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ बर्तानिया में ख़िदमत बजा लाने वाले मुबल्लेग़ीन सिलसिला की ऑनलाइन तिथि 10 जनवरी 2021 ई. को लंदन के रीजन (greater london area) में ख़िदमत बजा लाने वाले मुरब्बियान को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से ऑनलाइन मुलाक़ात की सआदत नसीब हुई। हुज़ूर अनवर इस मुलाक़ात के लिए अपने दफ़्तर इस्लामाबाद (टिललफ़ोरड) में रौनक अफ़रोज़ हुए। 55 मिनट पर मुश्तमिल इस मुलाक़ात में जुमला हाज़ेरीन को हुज़ूर अनवर से बात करने और आपसे दुआएं और हिदायात लेने का अवसर नसीब हुआ।

आदरणीय अताऊल-मुजीब राशिद साहिब मिशनरी इंचार्ज बर्तानिया ने बताया कि फ़ील्ड में जो मुबल्लेग़ीन काम कर रहे हैं उनकी संख्या31 है और दफ़ातर में काम करने वाले 10 हैं तो कुल 41 मुरब्बियान हैं। और आज की मज्लिस में 18 हाज़िर हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि जो दफ़ातिर में काम कर रहे हैं उनको भी बाअज़ जगह जहां मिशनरीज़ नहीं हैं या जहां नमाज़ सैंटर हैं और वहां सदर जमाअत या लोकल जमाअत वाले नमाज़ सैंटर में नमाज़ पढ़ाते हैं वहां उन लोगों की भी डयूटी लगाऐं, वहां जाया करें कम से कम एक नमाज़ वहां पढ़ा दें। और आजकल के हालात के मुताबिक़ दरस भी दिया जा सकता है। जब से कोविड का मसला शुरू हुआ है आपकी मसाजिद में दरस बिल्कुल बंद हो चुका है। हालाँकि सुबह का दरस पाँच सात मिनट का तफ़सीर का दिया जा सकता है, कोई ऐसा मसला नहीं है। हम ने यहां मस्जिद मुबारक में दरस बंद नहीं किया। बिल्कुल ही बैठ ना जाएं कि कल को पता न लगे कि दरस भी कोई चीज़ होती थी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : मस्जिदों में हीटिंग का निज़ाम अच्छा करें या जो नमाज़ सैंटर हैं हीटिंग का निज़ाम अच्छा करें लेकिन साथ ही थोड़ी सी खिड़की भी खुली होनी चाहिएता कि ताज़ा हवा आती रहे। फिर मुरब्बियान जो हैं जब दरस देने आते हैं या पब्लिक में आते हैं तो में vicks लगा के और मासक पूरी तरह पहन के जो भी गर्वनमैंट का निर्धारित शूदा प्रोटोकोल है इस को observe करते हुए आया करें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं, जब हुकूमत ने रोका था तब तक ठीक था। जब उन्होंने थोड़ी सी छुट्टी दी है तो क़ानून के दायरे के अंदर रहते हुए जो maximum फ़ायदा उठा सकते हैं उठाना चाहिए। बाज़ारों में नहीं फिरना चाहिए। प्रत्येक मुरब्बी को अपने अपने इलाक़े में जमाअत के अफ़राद को नसीहत करते रहना चाहिए कि बिला वजह सड़कों पर न फिरें, गर्वनमैंट ने मना किया हुआ है। नमाज़ के लिए अपनी अपनी जाए-निमाज़ साथ ले के आया करें या कपड़ा ले के आया करें कम स्वे कम सज्दे की जगह पर रखने के लिए ।

दूसरे यह कि मस्जिदों में जो कारपेट हैं उनके ऊपर hoover फिरना चाहिए और मस्जिद में रोज़ाना जब इशा की नमाज़ पढ़ा लें तो फिर धूआँ देने का इंतिज़ाम हो। प्रत्येक मस्जिद में धूआँ दिया जाए। धूआँ देने के बाद अच्छी तरह मस्जिद बंद करें। अगर फ़ायर अलार्म लगे हैं और धूआँ दे रहे हैं तो इस का इंतेज़ाम पहले ही कर लें।

एक मुरब्बी साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर साउथ ऑल की कौंसल की तरफ़ से ख़त आया है कि जितनी भी इबादत गाहैं साउथ ऑल में उनको बंद कर दिया जाए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि फिर यह है कि फ़ज्र के बाद प्रत्येक घर में दर्स का इंतेज़ाम हो और पता हो कि रोज़ाना कितना हिस्सा दर्स का देना है। और जो दर्स नहीं दे सकते उन के लिए फिर आपका इंतेज़ाम होना चाहिए कि आप बैठ के दे दें और वे ऑनलाइन सुन लिया करें।

शेष पृष्ठ 11 पर

पृष्ठ01 का शेष

पहुंचाना उद्देश्य था।

इस आयत का ताल्लुक़ पहली आयत से यह है कि पहले बताया जा चुका है कि तुमको भी इनाम मिलेंगे तुम मक्का वालों की तरह न बन जाना जिन्हों ने शरीयत ही का इंकार कर दिया और अपने लिए ख़ुद-साख़्ता क़ानून काफ़ी समझा। और तुम यहूद की तरह भी न बनना जिन्हों ने ख़ुदाई शरीयत में इख़तेलाफ़ शुरू कर दिए और उसकी ख़िलाफ़वरज़ी करने लग गए।

अब बताता है कि तुम कैसे बनना। फ़रमाया तुम इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह बनना। जो विशेषताएं उसकी हैं, वह अपने अंदर पैदा करना। इस का नतीजा यह होगा कि जो सुलूक हमने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ किया था वही तुम्हारे साथ करेंगे।

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad